अनुभव कुमार पाण्डेय (January 2022’जनपद महराजगंज में इन्सेफलाइटिस का बदलता प्रतिरूप’
International Journal of Economic Perspectives,*16*(1), 218-231
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

’जनपद महराजगंज में इन्सेफलाइटिस का बदलता प्रतिरूप’

अनुभव कुमार पाण्डेय
समता स्नातकोत्तर महाविद्यालय
सादात गाज़ीपुर

मुख्य भाब्द – जापानी इन्सेफ्लाइटिस, कम्प्यूटेड टोमोग्राफी (CT Scan) प्रतिजैविक, मष्तिष्क मेरूद्रव, सामाजिक पुर्नवास

प्रस्तावना : किसी क्षेत्र वि”ोष का भौगोलिक पर्यावरण वहॉ के निवासियों के स्वास्थ्य को प्रभावित करता है। चार्ल्स डर्विन की पुस्तक ’Origin of Species’ के प्रका”ान (1859 ई0) के बाद मानव तथा पर्यावरण के अर्न्तसम्बन्धों को समझने के लिए एक नई दि”ाा का उद्भव हुआ, जबकि कार्लरिटर ने 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में भूतल के सभी तत्वों (मानवीय एवं प्राकृतिक) में परस्पर अर्न्तसम्बन्ध को बतलाया था। अर्थात तात्पर्य यह है कि पृथ्वी का अध्ययन मानव के निवास्य के रूप में किया जाना चाहिए। इससे स्पष्ट है कि किसी भी क्षेत्र का पर्यावरण अपने निवासियों का प्रभावित करता रहा है उपरोक्त भौगोलिक विचारधाराओं एवं इसेफलाइटिस रोग के महराजगंज जनपद में विस्तार के फलस्वरूप प्रतीक अध्ययन के रूप में इस अध्ययन क्षेत्र का चयन किया गया है।

उत्तर प्रदे”ा के पूर्वी भाग में गोरखपुर मण्डल के अन्तर्गत स्थित जनपद महराजगंज $26^0$53 उत्तरी अक्षांस में $29^0$26′ उत्तरी अक्षांस तथा $83^0$56′ पूर्वी दे”ाान्तर से $83^0$60′ पूर्वी दे”ाांतर के मध्य 2954 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र में अवस्थित है।

इन्सेफलाइटिस या जापानी बुखार वायरस संक्रमण से होने वाला एक प्रकार का दीमागी बुखार है। अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से धान के खेतों में पनपने वाले क्यूलेक्स ट्राइटेनियर हिचर्स समूह के मच्छर जो जापानी इसेंफलाइटिस से सवंमित होते है, इन्ही संक्रमित मच्छरों के काटने स यह रोग मनुष्यों में आ जाता है। अर्थात् जापानी इसेफलाइटिस

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

वायरस से संक्रमित पालतू सुअर एवं जंगली पक्षियों को काटने पर मच्छर संक्रांत हो जाते है। इसे बाद संक्रांत मच्छरों के काटने पर यह बिमारी मानवों में चली जाती है।

पूर्वाचल में इंसेफलाइटिस का पता सर्वप्रथम 1978 में चला। जेई या जापानी इंसेफलाइटिस के नाम से जाने वाले इस वायरल फिवर का प्रकोप अध्ययन क्षेत्र के साथ–साथ पूरे पूर्वाचल में रहता है।

पहली वारि"ा के साथ ही संक्रमित मच्दर और सूअरों के अलावा दूषित जल के सेवर भी इस रोग की संभावना को बढाता है। इस रोग का सर्वाधिक f"ाकार बच्चें होते है जिनमें कुछ में शारीरिक अपंगता तथा कुछ में स्थाई आ जाती है। इस बिमारी के सम्पर्क में आने पर व्यक्ति के सोचने, समझने तथा देखने व सुनने की क्षमता प्रभावित हो जाती है। व्यक्तिगत सर्वेक्षण से स्पष्ट हुआ है कि इस वायरस से अधिकां"ातः 1 से 14 वर्ष तक के बच्चे तथा 65 वर्ष के उपर आयु के लोग आते है।

अध्ययन का उद्दे"य :

– जनपद महराजगंज में इन्सेफलाइटिस फैलने के प्रमुख कारणों का अध्ययन करना
– अध्ययन क्षेत्र के भौगोलिक पर्यावरण से इन्सेफलाइटिस रोग के अन्तर्गत सम्बन्ध का पता लगाना
– जनपद महराजगंज में इंसेफेलाइटिस के बदलते प्रतिरूप (2017–21) का अध्ययन करना।

आकड़ों का स्रोत एवं अध्ययन विधि

स्थानीय स्तर पर महराजगंज जनपद में व्याप्त इन्सेफलाइटिस के समुचित अध्ययन हेतु मुख्य रूप से आकड़ों का संग्रह प्राथमिक आकड़ों के रूप में व्यक्तिगत सर्वेक्षण के माध्यम से किया जायेगा।

द्वितीयक आकड़े सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, जिला स्वास्थ्य केन्द्र एवं BRD Medical College, Gorakhpur के इन्सेफलाइटिस विभाग से प्राप्त किया जायेगा।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

अध्ययन विधि तंत्र–”ाोधार्थी द्वारा व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं प्र”नावली विधि से प्राप्त प्राथमिक एवं विभिन्न स्वास्थ्य कार्यालयों से द्वितीयक रूप में प्राप्त आकड़ों का अध्ययन वि”लेषण करते हुए निष्कर्ष की प्राप्ति की गई है।

भौगोलिक पर्यावरण एवं इन्सेफलाइटिस के मध्य अर्न्तसम्बन्ध को ज्ञात करने के लिए विभिन्न चरों के मध्य सम्बन्ध ज्ञात करते हुए प्रतिचयन विधि से विगत 5 वर्षो (2017–18 से 2021–22) तक के आकड़ों का वि”लेषण करते हुए इस रोग के बदलते प्रतिरूप से निष्कर्ष की प्राप्ति किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र की भौगोलिक वि”ोशताए

जनपद महराजगंज, उत्तर प्रदे”ा के पूर्वी भाग में स्थित है। इस जनपद का विस्तार सरयू पार मैदान के पूर्वी भाग में है, जिसके उत्तरी भाग में भारत एवं नेपाल की अन्तर्राष्टीय सीमा है। क्षेत्र का अक्षा”ाीय विस्तार $26^0$53′ उत्तरी अक्षां”ा से $27^0$26′ उत्तरी अक्षां”ा तथा $83^0$60′ पूर्वी दे”ाान्तर के मध्य स्थित है। जनपद की पूर्वी सीमा कु”ाीनगर जनपद, पि”चमी सीमा सिद्धार्थनगर तथा दक्षिणी सीमा जनपद गोरखपुर द्वारा निर्धारित होती है। इसका क्षेत्र 2952 वर्ग किलोमीटर है। जो उत्तर प्रदे”ा का 1.21 प्रति”ात है।

2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 2684703 है तथा जनसंख्या घनत्व 910 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी है। लिंगानुपात 938 तथा साक्षरता अनुपात 64.3 है। क्षेत्र की उत्तर से दक्षिण अधिकतम चौड़ाई 65 किलोमीटर तथा पूर्व से पि”चम अधिकतम लम्बाई 70 किलोमीटर है। प्र”ाासनिक दृष्टि से क्षेत्र 4 तहसील तथा 12 विकास खण्डों में विभक्त है। यहॉ 7 नगरीय क्षेत्र है। जिनमें महराजगंज तथा नौतनवा नगर पालिका एवं घुघुलो, सिसवा, निचलौल सोनौली एवं आनन्द नगर पंचायत क्षेत्र के अन्तर्गत है। यहॉ कुल न्याय पंचायतों की संख्या 102 है।

यहॉ के प्रमुख नदियों में गण्डक, एवं रोहिन है। क्षेत्र के पि”चमी भाग में घोघी नदी, पूर्व में छोटी गण्डक एवं मध्यवर्ती भाग में रोहिन नदी है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

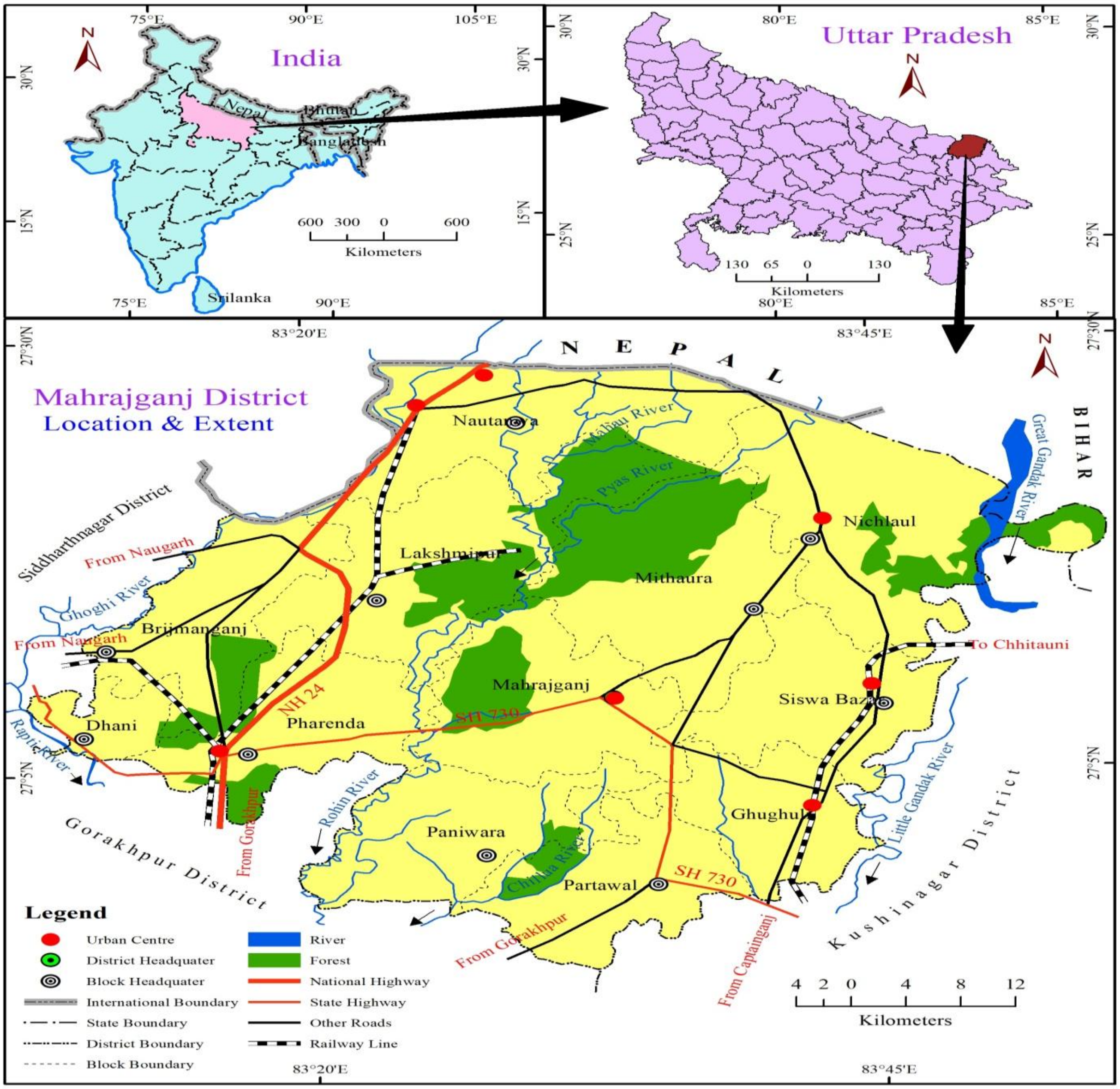

अध्ययन क्षेत्र में इन्सेफलाइटिस का प्रारूप

पूर्वाचल में जापानी इन्सेफलाइटिस रोग का पता सर्वप्रथम 1978 में लगा तब से ही महराजगंज जनपद भी इसकी चपेट में आया। दूषित जल के सेवन के अलावा संक्रमित सुअर और मच्छरों से फैलने वाली इस बिमारी के सर्वाधिक ि"ाकार वृद्ध एवं 0–14 वर्ष की आयु के बच्चे होते है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

इस बिमारी का प्रकोप अधिकां"ातः वारि"ा के वाद के महीने अगस्त सितम्बर और अक्टूबर में सर्वाधिक देखने को मिलता है।

विगत कई वर्षो से महराजगंज जनपद में इस रोग से लोगों में भय व्याप्त होता जा रहा है।

इस बिमारी के हल्के संक्रमण में सिर दर्द के साथ बुखार के लक्षण प्रकट होते है जबकि गम्भीर प्रकार के संक्रमण में तीब्र बुखार एवं सिरदर्द, गर्दन में अकड़न, घबराहट, कपकपी, उल्टी, मिचली, भूख न लगना, 'ाारीरिक थकान मानसिक भ्रम तथा चिड़चिड़ापन प्रमुख लक्षण उत्पन्न होते है।

सारणी संख्या 01

इसेफलाइटिस का विकास खण्डवार प्रारूप (2017–21)

विकास खण्ड /वर्ष	2017			2021			परिवर्तन		
	M	F	Total	M	F	Total	M	F	Total
नौतनवा	16	14	30	5	7	12	11	7	18
लक्ष्मीपुर	9	11	20	4	4	8	5	7	12
निचलौल	14	19	33	6	11	17	8	8	16
मिठौरा	31	21	52	10	9	19	21	12	33
सिसवा	23	27	50	6	5	11	17	22	39
बृजमनगंज	0	0	0	1	2	3	–1	–2	–3
महराजगंज	36	28	64	8	14	22	28	14	42
घुघली	19	15	34	13	5	18	6	10	16
पनियरा	26	24	50	6	9	15	20	15	35
परतावल	20	16	36	14	10	24	6	6	12
धानी	5	6	11	1	5	6	4	1	5
फरेन्दा	17	16	33	6	1	7	11	15	26
			413			162			251

स्रोत–"ाोधार्थी द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक आकड़ों से परिगणित

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

सारणी नं 02

जनपद में विकास खण्डवार इंसेफलाइटिस मरीजो की संख्या (प्रति"ात में)

विकास खण्ड / वर्ष	2017	2021
नौतनवा	7.26	7.40
लक्ष्मीपुर	4.84	4.93
निचलौल	7.99	10.49
मिठौरा	12.59	11.72
सिसवा	12.10	6.79
बृजमनगंज	0	1.85
महराजगंज	15.49	13.58
घुघुली	8.23	11.11
पनियरा	12.10	9.25
परतावल	8.71	14.81
धानी	2.66	3.70
फरेन्दा	7.99	4.32

स्रोत – शोधार्थी द्वारा परिगणित

अध्ययन क्षेत्र कुल 12 विकासखण्डों में विभाजित है व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं जिला चिकित्सालय महराजगंज से प्राप्त आकड़ों को सारणी नं0 1 में प्रदर्"ित किया गया है। उपरोक्त (सारणी नं0 01) के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2017–18 में इंसेफलाइटिस से प्रभावित मरीजों की संख्या में सर्वाधिक 64 मरीज महराजगंज विकासखण्ड में मिले है। जो जनपद के कुल मरीजों का 15.49% ह जबकि 2021–22 के आकड़ों पर दृष्टिपात करने पर यह स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में सर्वाधिक 24 मरीज परतावल

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

विकास खण्ड में 14.81% है।

वर्ष 2017–18 में महिलाओं की संख्या के आधार पर सर्वाधिक 28 महिलाएं महराजगंज विकासखण्ड में एवं सबसे कम लक्ष्मीपुर विकासखण्ड में 11 महिला मरीज मिली है। जबकि 2021–22 में सर्वाधिक 24 महिलाएं परतावल में एवं सबसे कम 3 महिलाएं बृजमनगंज में इंसेफलाइटिस से प्रभावित पायी गई ह।

उपरोक्त सारणी संख्या 1 के वर्ष 2017–18 के अनुसार मरीजों की कुल संख्या अध्ययन क्षेत्र में 413 थी, वहीं 2021–22 में विभिन्न राजकीय एवं चिकित्सकीय विकास के फलस्वरूप यह संख्या घटकर मात्र 162 रह गई अर्थात् इंसेफलाइटिस से प्रभावित अध्ययन क्षेत्र में वर्ष 2017–18 के मुकाबले 2021–22 में 251 मरीज घटे है अर्थात् 60.78% की कमी आई है।

सारणी संख्या 03

इंसेफलाइटिस प्रभावित मरीजों का श्रेणीवार प्रति"ात – 2017

श्रेणी	मरीजों की संख्या का प्रति"ात	विकासखण्ड की संख्या	विकासखण्ड का प्रति"ात	विकासखण्ड का नाम
निम्न	< 3	1	9.09	धानी
मध्यमनिम्न	3–6	1	9.09	लक्ष्मीपुर
मध्यम	6–9	5	45.45	नौतनवा, निचलौल, घुघुली, परतावल, फरेन्दा
मध्यम उच्च	9–12	0	0	.
उच्च	12 से उपर	4	36.36	मिठौरा, सिसवा, महराजगंज, पनियरा

स्रोत – शोधार्थी द्वारा परिगणित

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

International Journal of Economic Perspectives,*16*(1), 218-231

Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

Encephalitis Patients in Maharajganj District – 2017-18

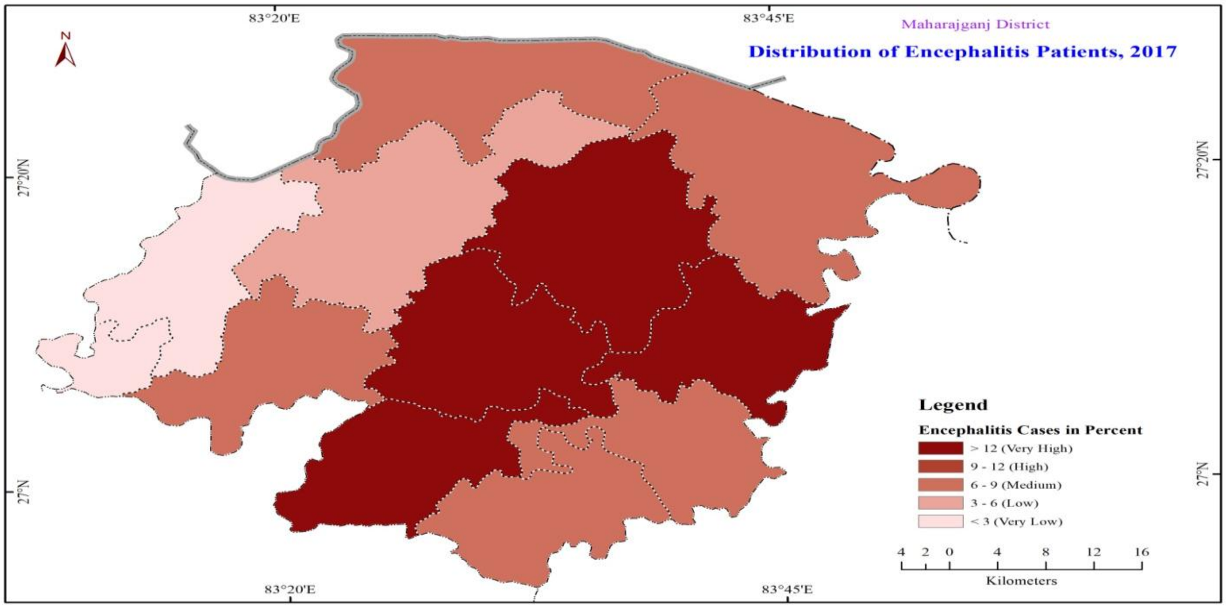

उपरोक्त सारणी संख्या 03 और मैप संख्या –02 के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि वर्ष 2017–18 में मरीजों का उच्चतम घनत्व उच्च श्रेणी में 4 विकास खण्ड क्रम"ाः मिठौरा, सिसवा, महराजगंज एवं पनियरा जो कुल विकास खण्ड का 36.36% है। जबकि मध्यम श्रेणी म सर्वाधिक 5 विकास खण्ड (45.45%) नौतनवा, निचलौल, घुघली, परतावल एवं फरेन्दा स्थित है।

मध्यम निम्न श्रेणी में एक विकास खण्ड लक्ष्मीपुर एवं निम्न श्रेणी में एक विकास खण्ड धानी है। उपरोक्त से यह स्पष्ट होता है कि धानी में जनजागरूकता के साथ–साथ चिकित्सा व्यवस्था बेहतर है।

उपरोक्त मानचित्र सं0 1 एवं सारणी नं0 3 को दृष्टिगत रखते हुए यह स्पष्ट है कि इन्सेफलाइटिस का प्रभाव अध्ययन खेत्र के लगभग मध्यभान में स्थित मिठौरा विकास खण्ड पूर्व में स्थित सिसवा विकास खण्ड मध्यभाग में स्थित महराजगंज विकासखण्ड एवं अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी भाग में रोहिन नदी क्षेत्र में स्थित पनियरा विकास खण्ड सबसे अधिक प्रभावित

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

विकासखण्ड रहा है।

मध्यम श्रेणी में कुल 45.45% विकासखण्ड सम्मिलित है, जिसमें जनपद के उत्तरी भाग में नेपाल की तराई में स्थित नौतनवा विकासखण्ड एवं उत्तरपूर्वी भाग में स्थित नेपाल से सोमा साझा करता हुआ निचलौल विकासखण्ड अध्ययन क्षेत्र के दक्षिणी भाग में घुधली, परतावल और दक्षिण पि"चम में फरेन्दा विकासखण्ड है।

मध्यम निम्न एवं निम्न श्रेणी के अन्तर्गत एक–एक विकास खण्ड क्रम"ाः लक्ष्मीपुर एवं धानी स्थित है। इंसेफलाइटिस फैलाने में नमी के साथ–साथ गन्दगी का भी महत्वपूर्ण योगदान है जिसमें जनपद में सूअरों की संख्या के आधार पर यह दृष्टिगत है कि धानी विकास खण्ड में जनपद का 1.72 प्रति"ात 346 सूअर है। जिनकी संख्या सभी विकास खण्डो से सबसे कम है और मरीजों की संख्या भी धानी विकास खण्ड में सबसे कम पायी गयी है। अतः इंसेफलाइटिस का गन्दगी से समानुपातक सम्बन्ध है।

सारणी संख्या– 04

इंसेफलाइटिस प्रभावित मरीजों का श्रेणीवार प्रति"ात – 2021

श्रेणी	मरीजों की संख्या का प्रति"ात	विकासखण्ड की संख्या	विकासखण्ड का प्रति"ात	विकासखण्ड का नाम
निम्न	< 3	1	8.33	बृजमनबंज
मध्यमनिम्न	3–6	3	25	लक्ष्मीपुर, धानी, फरेन्दा
मध्यम	6–9	2	16.66	नौतनवा, सिसवा
मध्यम उच्च	9–12	4	33.33	निचलौल, मिठौरा, घुघुली, पनियरा
उच्च	> 12	2	16.66	म्हराजगंज, परतावल

स्रोत – शोधार्थी द्वारा परिगणित

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

Encephalitis Patients in Maharajganj District – 2021

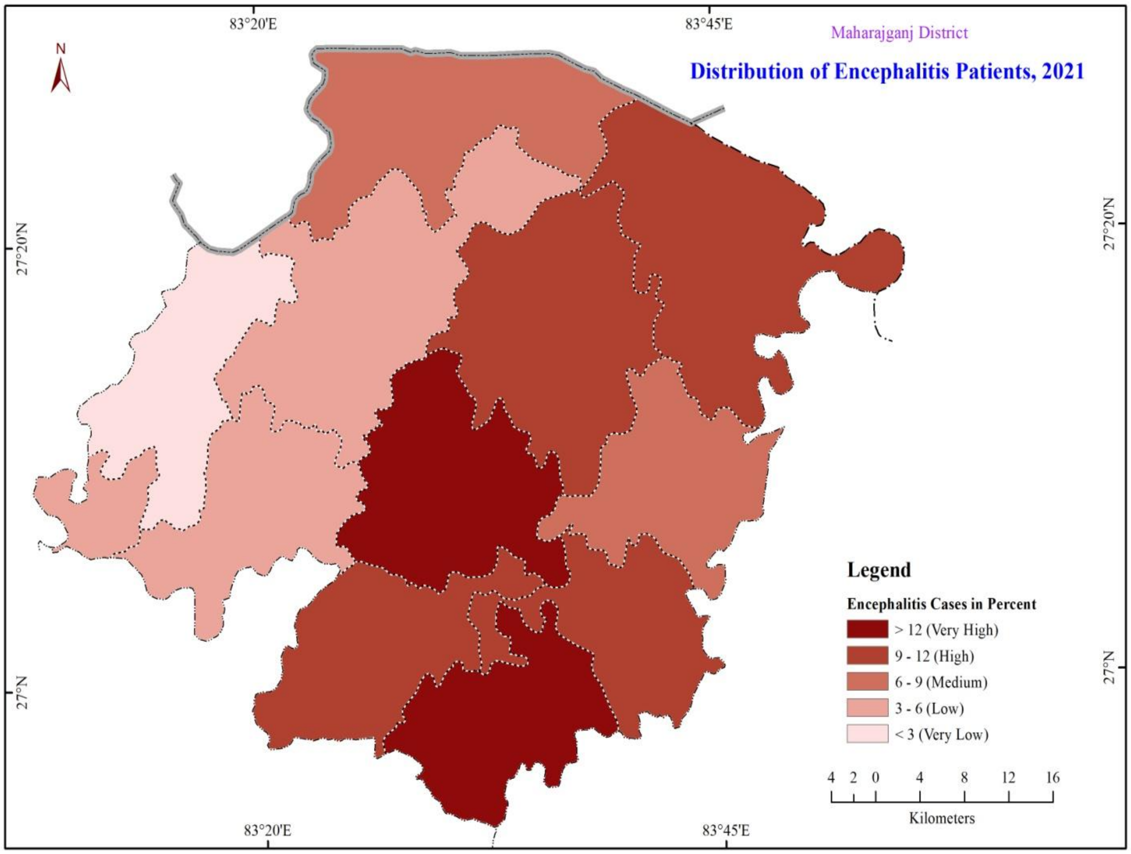

उपरोक्त सारणी संख्या 2 (2017—22) एवं सारणी सं0 4 तथा मैप सं0 3 के अध्ययन वि"लेषण के आधार पर इन्सेफलाइटिस मरीजों की संख्या में काफी परिवर्तन हुआ है।

उच्च श्रेणी में (सारणी नं0 2, 2017—18 में जहॉ 4 विकाखण्ड (मिठौरा, सिसवा, महराजगंज, पनियरा) थे। वहीं 2021—22 में उच्च श्रेणी में केवल दो विकासखण्ड महराजगंज और परतावल है। जिसके आधार पर यह कहा जा सकता है कि जन जागरूकता एवं बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण इन्सेफलाइटिस में कमी आई है।

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

मध्यम श्रेणी में 2017–18 जहॉ 5 विकासखण्ड (नौतनवा, निचलौल, घुघली, परतावल, फरेन्दा) थे। वहीं अब केवल 2 विकासखण्ड (नौतनवा एवं सिसवा) है। विकासखण्ड के प्रति"ात के आधार पर 2017 में उच्च श्रेणी में 36.3% विकासखण्ड थे, जो 2021 में घटते हुए 16.66% रह गये। मध्यम श्रेणी में 45.45% से घटकर मात्र 16.66% विकासखण्ड इंसेफलाइटिस से ग्रसित है। 2017–18 में निम्न श्रेणी में केवल एक विकास खण्ड धानी है जो कि 2021–22 में कुछ और मरीजों की संख्या बढ़ने के कारण मध्यम निम्न श्रेणी में पहुॅच गया है।

वर्ष 2021–22 में निम्न श्रेणी में एक विकास खण्ड बृजमनगंज है जहॉ पर जनपद के कुल मरीजों का केवल 1.85 प्रति"ात इंसेफलाइटिस मरीज मिले है। अर्थात् अनय विकास खण्डों की तुलना में बृजमनगंज में स्वास्थ्य सेवाएं बेहतर है। उपरोक्त प्रारूप के विस्तृत अध्ययन से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि इन्सेफलाइटिस से बचाव में वयवस्थाएं बेहतर हुई है।

भौगोलिक पर्यावरण एवं इन्सेफलाइटिस का अर्न्तसम्बन्ध :

जापानी इन्सेफलाइटिस विमारी के बारे में अध्ययन क्षेत्र में सर्वेक्षण के दौरान व्यक्तिगत सर्वेक्षण एवं जिला स्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों से प्राप्त आकड़ों का वि"लेषण करने तथा मरीजों से व्यक्तिगत जानकारी लेने के फलस्वरूप यह स्पष्ट हुआ है कि इस बिमारी के लिए जनपद का भौगोलिक एवं पर्यावरण भी महत्वपूर्ण सहायक सिद्ध हो रहा है। महराजगंज के उत्तरी पूर्वी छोर पर नेपाल की तराई पर्वतीय भूमि और दक्षिण में उच्च भूमि होने के फलस्वरूप घरातलीय स्वरूप लगभग नौकाकार हो जाने से जल जमाव अधिक होता है।

इसके अतिरिक्त हिमालय से निकलने वाली नदियां गण्डक, बूढी राप्ती, रोहिन इत्यादि के अपवाह प्रतिरूप क्षेत्र के कारण वि"ाष वि"ाष तौर पर वर्षात् के समय मे बाद की स्थिति एवं जलजमाव होने से इन्सेफलाइटिस के लिए एक अनुकूल द"ाा मिल जाती है। यही कारण

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

है कि जुलाई से सितम्बर और अक्टूबर में रोग फैलने की दर अपनी चरम पर होता है, जो निम्नांकित सारणी सं0 5 से प्रदर्शित है।

सारणी संख्या–05
महराजगंज जनपद में इसेंफलाइटिस मरीजों की माहवार स्थित – 2021

माह	मरीजों की संख्या
जनवरी	05
फरवरी	13
मार्च	05
अप्रैल	09
मई	03
जून	01
जुलाई	25
अगस्त	33
सितम्बर	31
अक्टूबर	25
नवम्बर	13
दिसम्बर	0

स्रोत–जिला चिकित्सालय जनपद महराजगंज से प्राप्त आकड़ों से परिगणित

ग्राफ संख्या 01

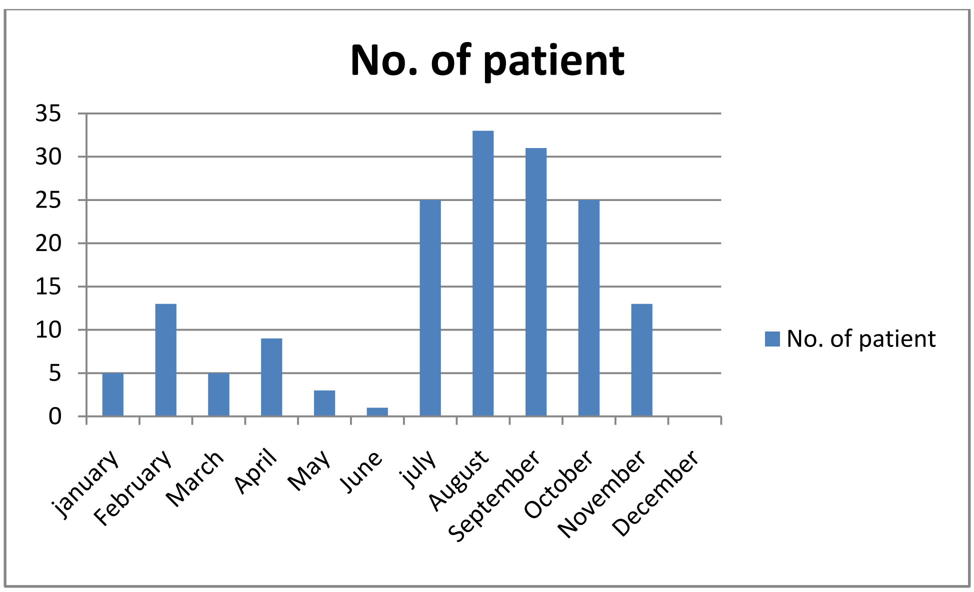

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

उपरोक्त सारणी संख्या 05 एवं ग्राफ संख्या 01 के आधार पर सर्वाधिक मरीज जुलाई से लेकर नवम्बर माह तक अधिका"ातः देखने को मिले है। इससे स्पष्ट है कि नमी वाले स्थानों तथा जलजमाव के क्षेत्रों में बरसात के महीनों से ही इस रोग के मरीजों की वृद्धि प्रारम्भ हो जाती है। अध्ययन क्षेत्र तराई भाग में स्थित कृषि क्षेत्र की बहुलता वाला क्षेत्र है। जिसमे मुख्य रूप से खरीफ की फसल धान से क्षेत्र में व्याप्त जल–जमाव एवं नमी के फलस्वरूप मच्छरों के उत्पन्न होने की अनुकूलतम दशा मिल जाती है। इसके अलावा नमी युक्त इलाकों में सुअर पालन, मुर्गी पालन से फैली गन्दगी तथा उचित जल विकास की व्यवस्था न होने से आबादी के पास जल जमाव से इन्सेफलाइटिस का विस्तार बरसात् के दिनों में सर्वाधिक देखने को मिलता है।

उपरोक्त के आधार पर यह स्पस्ट है कि इस रोग की सबसे बड.ी वजह जलजमाव, नमी एवं गन्दगी है।

निशकर्श :

इस प्रकार यहॉ का भौगोलिक पर्यावरण इन्सेफलाइटिस को फैलाने में सहायक सिद्ध हो रहा है। प्रस्तुत अध्ययन से प्राप्त निष्कर्षो से यह स्पष्ट है कि यहॉ का भौगोलिक वातावरण इंसेफलाइटिस बिमारी के लिए अनुकूल द"ााएं उत्पन्न कर रहा है। पर्यावरणीय द"ााओं के अलावा नमी के साथ–साथ गंदगी भी इस रोग में सहायक सिद्ध हो रहे हैं जैसे की सर्वेक्षण के दौरान यह दृष्टिगत हुआ कि धानी विकास खण्ड में इंसेफलाइटिस के सबसे कम गरीब मिले है, जिसका सीधा संबन्ध विकास खण्ड में सुअरों की संख्या में भी दिखाई देता है। क्योकि धानी विकास खण्ड में पूरे जनपद में सबसे कम संख्या में (1.72 प्रति"ात) सूअर है जो इस रोग की उत्तम वाहक है इनकी संख्या कम होने की वजह से धानी विकास खण्ड में इंसेफलाइटिस का प्रभाव सबसे कम 2.66%, 2017 एवं 3.70%, 2021 रहा है, जो 2021 में

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,

मध्य निम्न श्रेणी में है। इस प्रकार अध्ययन क्षेत्र के पर्यावरण का इंसेफलाइटिस से सीधा संबंध दिखाई देता है। इंसेफलाइटिस के रोकथाम के लिए बाबा राघव दास मेडिकल कालेज, गोरखपुर में अलग से इंसेफलाइटिस वार्ड की भी व्यवस्था की गई है। ग्रामीणों की जानकारी एवं जनजागरूकता के लिए सरकारी स्तर पर कई प्रयास किये गये है।

सरकारी प्रयासों से विगत कई वर्षो में इस विमारी पर लगातार अंकुश भी लगा है और मरीजों की संख्या में कमी भी आ रही है। परन्तु आव"यकता यह है कि विभिन्न सरकारी सुविधाओं को समुचित विस्तार के साथ ग्रामीणों को उपलब्ध कराया जाए तथा जनजागरूकता एवं जनसहयोग के माध्यम से इस बिमारी से बचाव के सुरक्षात्मक उपायों पर अधिक ध्यान देते हुए लोगों को जागरूक किया जाए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. जिला सांख्यिकी कार्यालय जनपद महराजगंज
2. वेबसाइट – Maharajganj.nic.in
3. कार्यालय BRD Medical College, Gorakhpur.
4. कार्यालय– प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र (सभी विकास खण्ड, जनपद–महराजगंज)
5. अप्रकाि"ात शोध प्रबन्ध Sahoo Santanu – Geospatial Analysis for Encephalities Disease in Gorakhpur District, Department of Geography, DDU Gorakhpur University, Gorakhpur.
6. कार्यालय जिला चिकित्सालय जनपद–महराजगंज (2017–18)
7. कार्यालय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र,

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.
Corresponding author : अनुभव कुमार पाण्डेय
Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 31 January 2022,